IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, January 2026
Impact Factor: 7.67

संस्कृत काव्य में रस सिद्धान्त का विवेचन

डॉ. शीलेन्द्र पाठक

विभागाध्यक्ष–संस्कृत

यमुना प्रसाद शास्त्री स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिरमौर, जिला–रीवा (म.प्र.)

सारांश :–

संस्कृत काव्य में रस को काव्य की आत्मा मानी जाती है। रस सहृदयों के हृदय में सर्वोपरि आनन्द का संचार करने वाले काव्य का सारभूत तत्त्व है। रस को आस्वाद, आनन्द, काव्यानुभूति, काव्योत्कर्ष इत्यादि के अर्थ में संस्कृत काव्यशास्त्र में लिया गया है। भरत ने रसनिष्पत्ति का सूत्र बताते हुए कहा कि विभावों, अनुभावों और व्यभिचारिभावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। रससूत्र के चार प्रमुख व्याख्याकार हुए जिन्होंने संयोग और निष्पत्ति की व्याख्या की। इन चारों में अन्तिम आचार्य अभिनवगुप्त का सिद्धान्त प्रायः सर्वसम्मति से स्वीकार किया जाता है।

मुख्य शब्द–काव्यशास्त्र, रससूत्र, भरत, व्याख्याकार, भट्टलोल्लट, भट्टशंकुक, भट्टनायक, अभिनवगुप्त, साधारणीकरण, संस्कृत, संयोग, निष्पत्ति, विवेचन आदि।